RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

ईंटें, मनके तथा अस्थियां

हड़प्पा सभ्यता

अध्याय-1 | भाग-2



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

★ सम्भवतः हड़प्पा की सबसे विशिष्ट पुरावस्तु है?

A. फ़यॉन्स

B. मनके

C. मुहर

D. वृष्भ

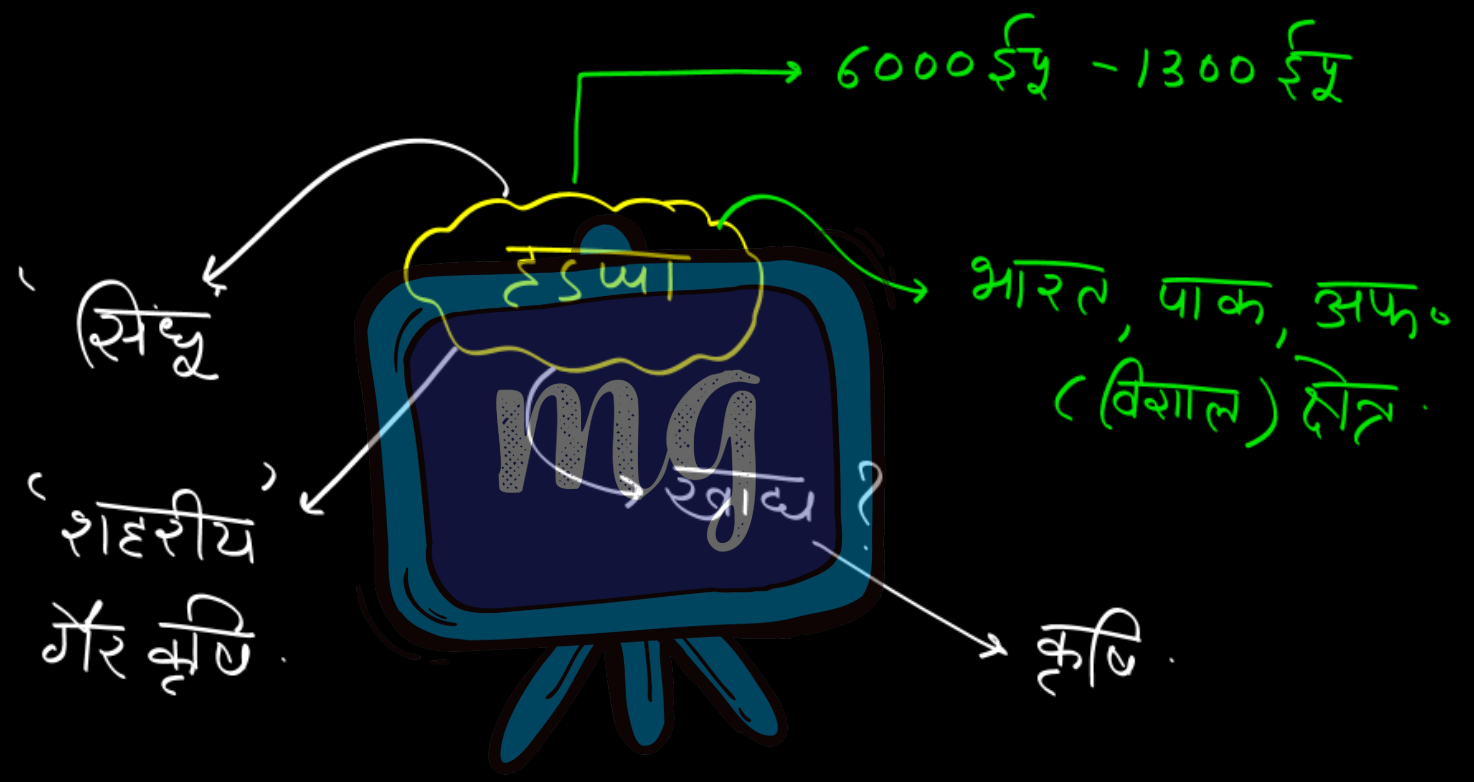
6000 ईपू - 1300 ईपू
सिंधु
हड़प्पा
भारत, पाक, अफ़०
(विशाल) क्षेत्र.
शहरीय
गैर कृषि.
mg
खाद्य ?
कृषि.

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

9. हड़प्पा सभ्यता की कृषि प्रौद्योगिकी पर चर्चा करें ?



- रेखा ↑ मुहर
- वृषभ + जुते हुए खेत
- नहर
- जुते हुए खेत कालीबंगा
- जल संचयन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि प्रौद्योगिकी



❖ कृषि विधियां है क्या?

1. वृषभ → बैल
=



जुते हुए

वृषभ + मुहरों पर रेखांकन = पुरातत्वविदों → खेत जुते हुए होंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

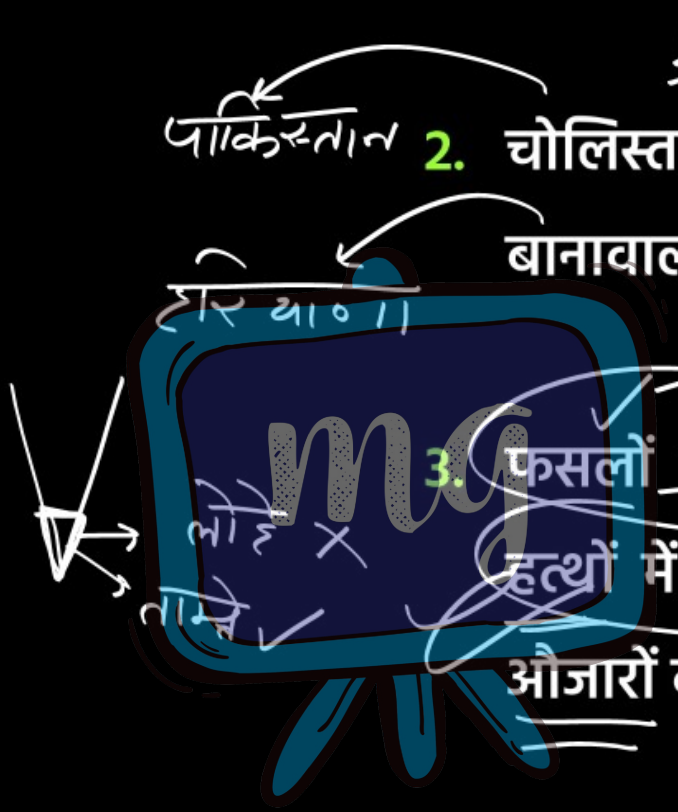

2. चोलिस्तान
बानावाली
मिट्टी के हल

3. फसलों की कटाई के लिए लकड़ी के हत्थों में पत्थर के फलकों या धातु के औजारों का प्रयोग करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



4. कालीबंगा (राजस्थान) में जुते हुए खेत के साक्ष्य।

हल रेखा के 2 समूह समकोण पर कटते हैं

अलग- अलग फसलें

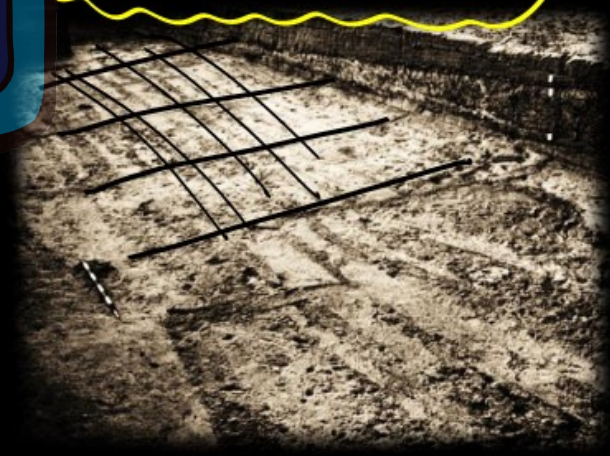

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वर्षा ↓ → पानी ↓

↓

कृषि ↓

अफ

5. हड़प्पा स्थल अर्द्ध शुष्क थे।

सिंचाई की आवश्यकता थी।

शोर्तुगई

नहरों के अवशेष

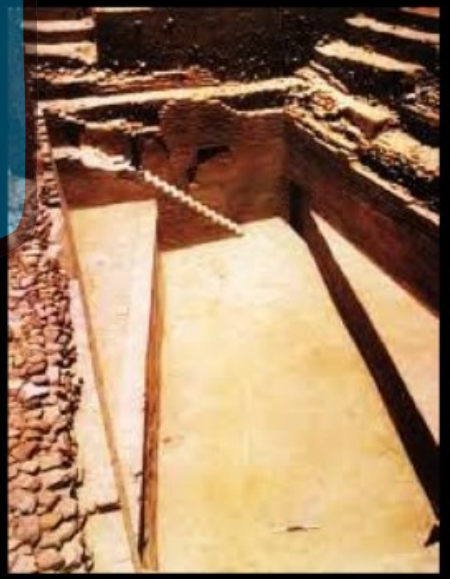

धोलावीरा

↓

जलाशय जल संचयन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

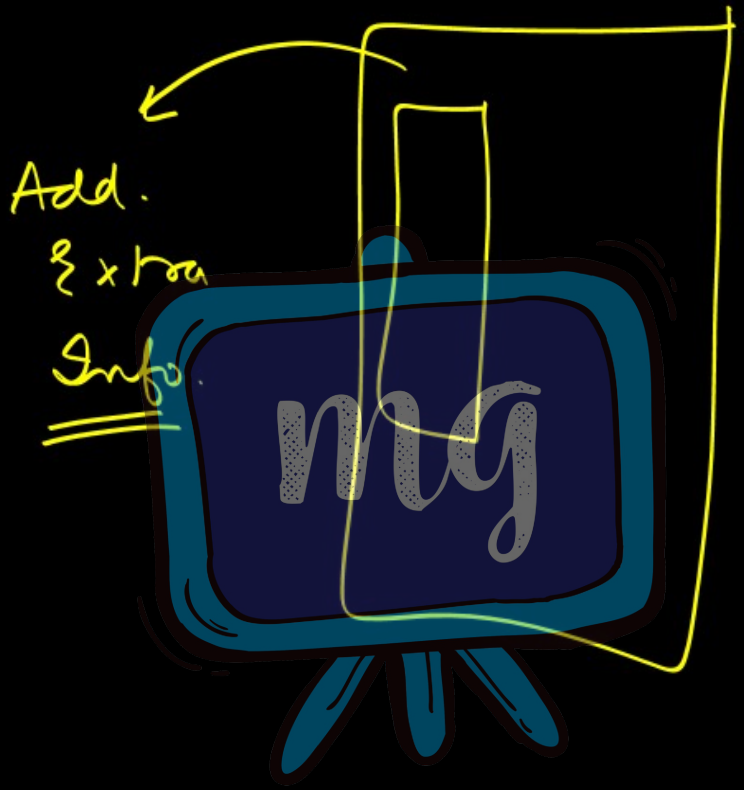

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्त्रोत 1 — पुरावस्तुओं की पहचान करना :



- हड़प्पा स्थल मोहन जोदड़ों में अवतल चक्कियाँ मिली हैं। ये बड़ी संख्या में मिली हैं। जनसामान्य
- ये अनाज पीसने तथा मसाले पीसने के काम में ली जाती थीं।
- ये कठोर, कंकरीले, आग्निज या बलुआ पत्थर से निर्मित थीं।
- इनका तल उत्तल है। ये जमीन में गाड़ने में सहायक है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ये दो प्रकार की हैं —

(i) एक वह जिनमें एक छोटा पत्थर आगे-पीछे चलाकर अनाज पीसा जाता था।

(ii) दूसरी वह जो मसाला कूटने के प्रयोग में ली जाती थी। इन्हें सालन पत्थर भी कहा गया है।



अर्नेस्ट मैके (1937) फर्दर एक्सकैवेशन्स एट मोहनजोदड़ो

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप कहां से प्राप्त हुये है?
- मोहनजोदडो कहाँ स्थित है?
- हडप्पा की बस्तियों की दो विशेषत। बताइये — (2011 CBSE)
- इतिहासकारों ने हडप्पा संस्कृति की निर्वाह रणनीतियों में नई अंतर्दृष्टि कैसे प्रदान की है? (2015 CBSE)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हड़प्पा → शहरीय ?

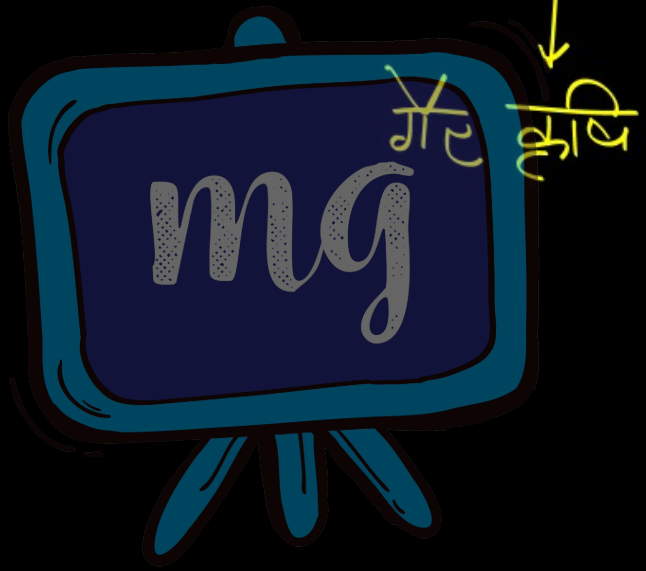

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

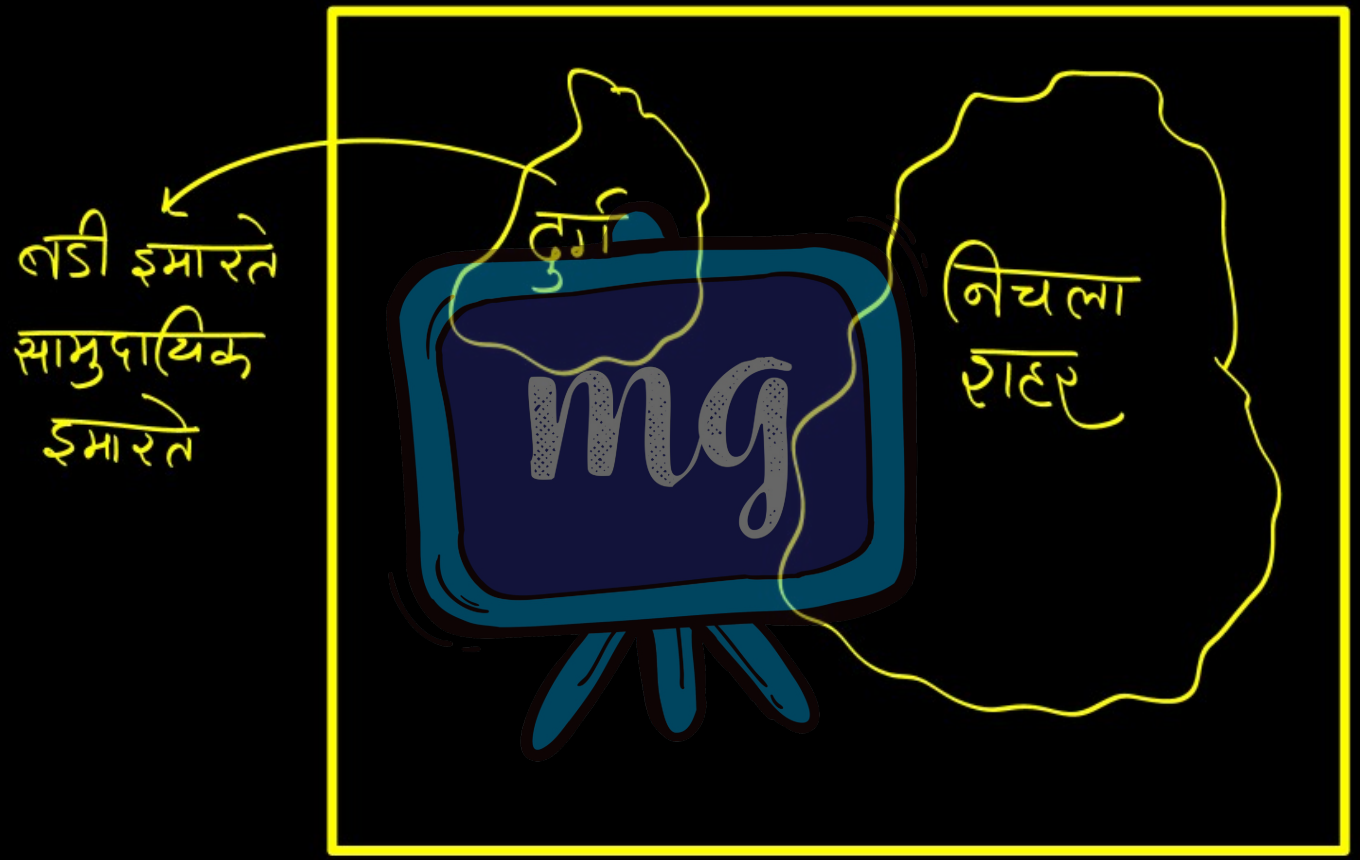

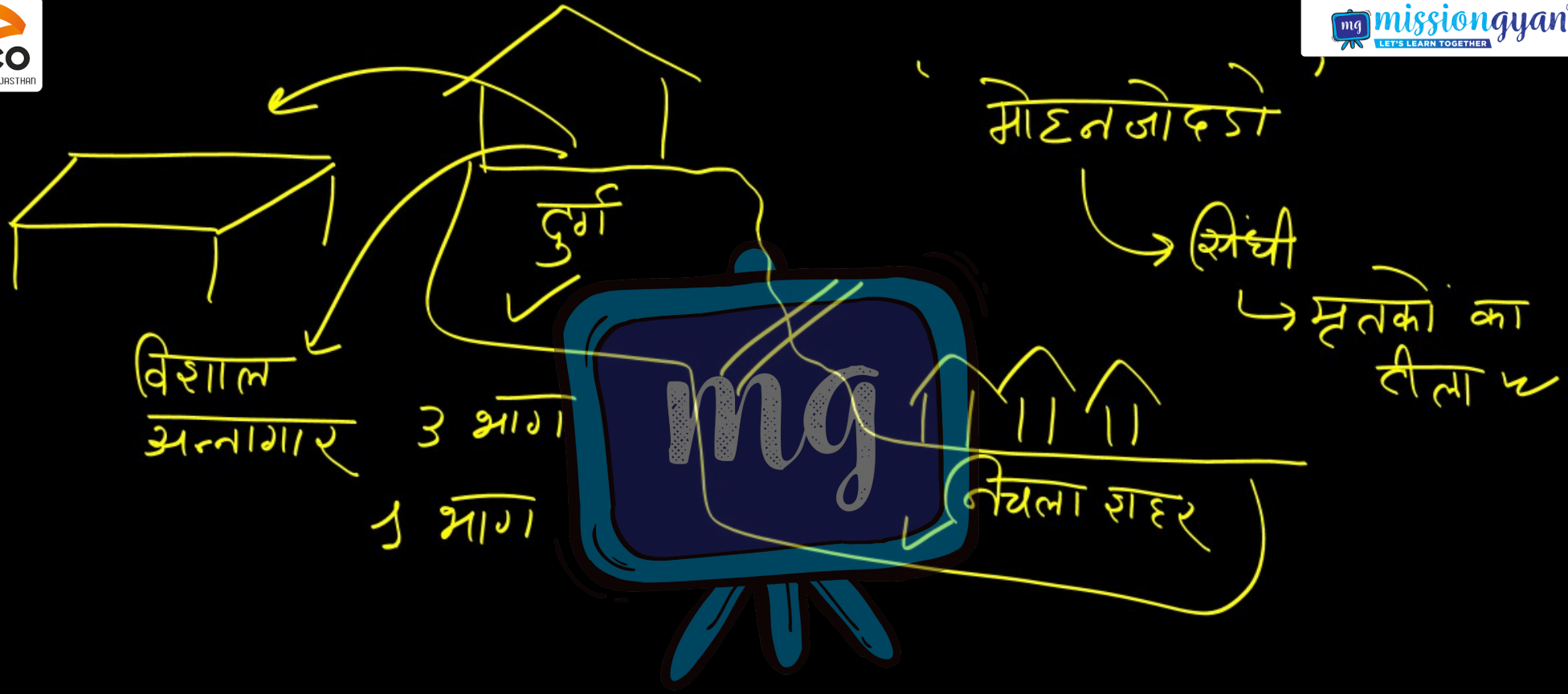
मोहनजोदड़ो
सिंधी
मृतकों का टीला
दुर्ग
विशाल अन्नागार
3 भाग
1 भाग
निचला शहर



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मोहनजोदड़ो

(एक नियोजित शहर) बस्ती



छोटा
(ऊँचाई) दुर्ग

बड़ा
(नीचा) निचला

- संरचनाऐं कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी।
- निचले शहर से अलग करने के लिए दीवार का घेरा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



निचला शहर

- यह भी दीवार द्वारा घेरा गया था। लेकिन फिर भी कई भवन ऊँचे चबूतरों की नींव पर बने थे।
- नियोजित जल निकास प्रणाली की अनूठी विशिष्टता थी।
- पहले नालियों के साथ गलियों को बनाकर फिर उसके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया।
- सड़कें व नालियां ग्रिड पद्धति से बनायी थी जो एक दूसरे को समकोण पर भी काटती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रह स्थापत्य

स्नानघर

ईंटे

सीढ़ियां



आंगन

चारों ओर कमरे

एकान्त का महत्व

कुऐं

700 (मोहनजोदडों)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दुर्ग



दुर्ग : विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों की संरचनाएँ मिली हैं।

(i) मालगोदाम :-

ईंटों से बने इनके निचले हिस्से ही शेष हैं। ऊपरी हिस्से संभवतः लकड़ी के बने होने के कारण नष्ट हो गये।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दुर्ग

(ii) विशाल स्नानागार :-

- चारों ओर से गलियारों से घिरा।
- तल तक जाने के उत्तरी व दक्षिणी भाग में सीढियाँ
- जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे का प्रयोग कर इसे जलबद्ध किया गया।

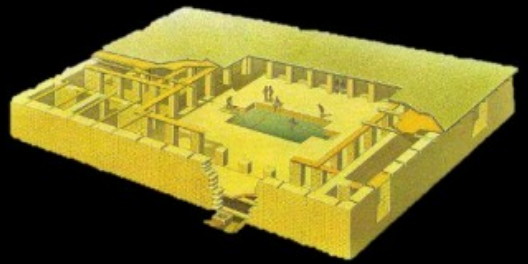

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके तीनों ओर कक्ष बने हैं, जिसमें 1 में 1 बड़ा कुआँ हैं।
- जलाशय का पानी एक बड़े नाले में जाता है।
- दूसरी ओर 8 स्नानघर हैं।

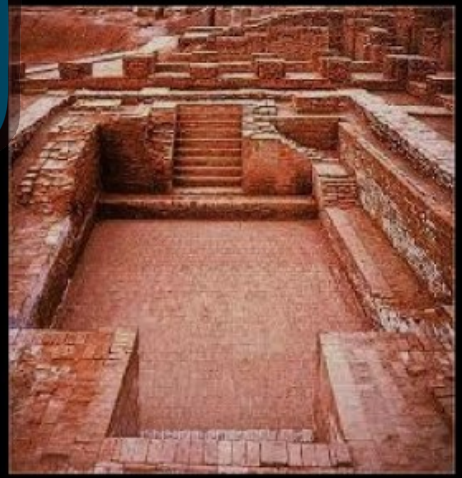

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ये स्नानघर एक गली के दोनों ओर 4–4 हैं।
- प्रत्येक स्नानघर की नालियां गली के नाले से मिलती है।
- इसकी विशालता एवं अनोखापन यह दर्शाता है कि इसका प्रयोग किसी विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए होगा।

सामाजिक भिन्नताओं का अवलोकन

A. शवाधानों का अध्ययन

(1) शवाधान : शवों का गर्तों में दफनाया जाता था।

- गर्तों की बनावट एक दूसरे से भिन्न होती थी। क्योंकि कुछ गर्तों की सतहों पर ईंटों की चिनाई की जाती थी जो कि सामाजिक भिन्नता का संकेत देती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ कब्रों में मृदभाण्ड तथा आभूषण मिले हैं जो संकेत देते हैं कि उनकी मान्यता रही हो कि ये मृत्योपरांत प्रयोग किये जा सकते हैं।
- कुछ शवाधानों में पुरुषों एवं महिलाओं दोनों में आभूषण मिले हैं।
- मृतकों के तांबे के दर्पणों के साथ भी दफनाया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 1980 के दशक में हड़प्पा के कब्रिस्तान में उत्खन्न में एक पुरूष की खोपड़ी के समीप शंख के उछल्ले, जैस्पर (एक उपरत्न), मनके, सूक्ष्य मनकों से बना एक आभूषण मिला है।
- मिश्र में भी विशाल पिरामिडों में जो कि हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थे राजकीय शवाधान बड़ी मात्रा में मिले हैं। जिनमें धन-सम्पत्ति भी दफनाई जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

B. उपयोगी तथा विलास की वस्तुओं में वर्गीकरण

(a) उपयोगी वस्तुएं :– ये रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुएं हैं जो पत्थर या मिट्टी से बनायी जाती है।
जैसे- चक्कियां, मृदभाण्ड, सुइयां आदि। ये वस्तुएं सभी बस्तियों में सर्वत्र पायी गयी हैं।

(b) विलास की वस्तुएं :– ये दुर्लभ या महंगी होती हैं। ये स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध पदार्थ से अथवा जटिल तकनीक से बनती हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शिल्प कार्य

- मनके बनाना
- शंख की कटाई
- धातुकर्म
- बांट बनाना







RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



1. **मनकें बनाना :** मनकों का निर्माण विविध पदार्थों से होता था।
   - कार्निलियन (सुंदर लाल रंग का)
   - जेस्पर
   - स्फटिक
   - शैलखड़ी जैसे पत्थरों से तथा
   - तांबा
   - कांसा
   - सोना जैसे धातुओं से

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- शंख
- फयान्स
- पकी मिट्टी से भी मनके बनते थे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

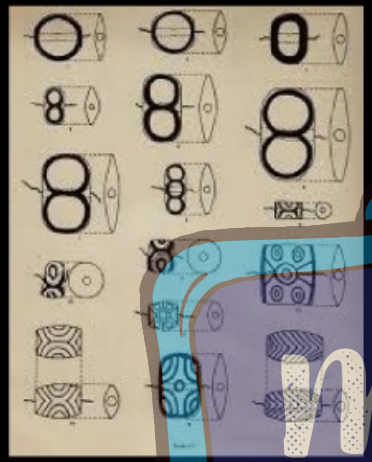

मनके कई आकार के होते थे

1. चक्राकार
2. बेलनाकार
3. गोलाकार
4. ढोलाकार
5. खण्डित

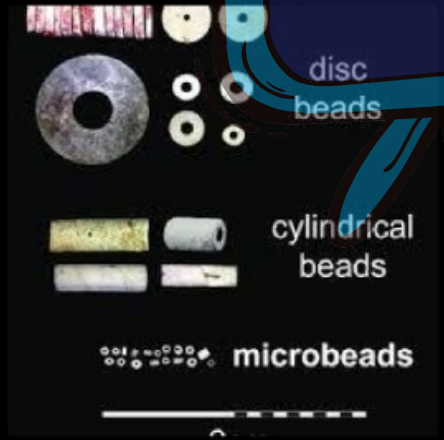





RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- मनकों को उत्कीर्णन या चित्रकारी से सजाया गया।
- सेलखड़ी चूर्ण के लेप को सांचे में ढालकर मनके बनाए जाते थे।
- कार्निलियन का लाल रंग पीले कच्चे माल को पकाकर प्राप्त होता था।
- पत्थर के पिंड पहले तोड़े जाते, फिर बारीकी से शल्क निकालकर अंतिम रुप दिया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





- इसके बाद घिसाई, पॉलिश और छेद करने की प्रक्रिया होती थी।
- चन्हूदड़ो शिल्प कार्य में लगभग पूरी तरह संलग्न था।
- चन्हूदड़ो, लोथल और धौलावीरा में छेद करने के विशेष उपकरण मिले हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. **शंख से बनी वस्तुएँ :** शंख से चूड़ियां, करछियां और पच्चीकारी की वस्तुएं बनती थीं।

- नागेश्वर और बालाकोट, समुद्र तट के पास होने के कारण, शंख निर्माण के प्रमुख केंद्र थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मानचित्र 1
कुछ महत्वपूर्ण
विकसित हड़प्पा पुरास्थल
रेखाचित्र